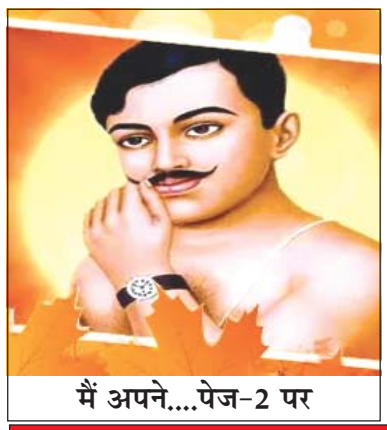

मैं अपने....पेज-2 पर

अपराध के खोजपूर्ण समाचारों का निर्भिक एवं निष्पक्ष हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

क्राइम वीक

मिनी लॉकडाउन...पेज-4 पर

वर्ष : 7 अंक : 11 | शुक्रवार 14 अगस्त से 20 अगस्त 2020 तक नोएडा (गौतमबुद्धनगर) | पृष्ठ : 4 मूल्य : 2 रूपये

74वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर लाल किले के प्राचीर से

मोदी ने पाकिस्तान और चीन पर साधा निशाना

विशेष प्रतिनिधि

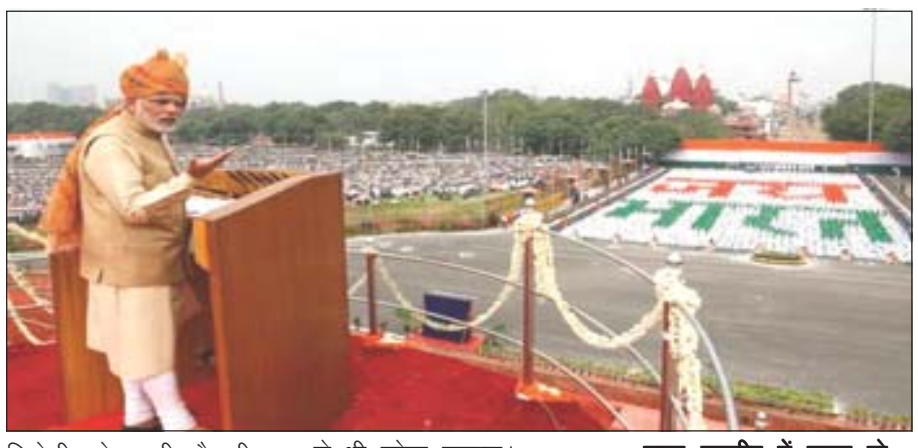

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 74 वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर लाल किले के प्राचीर से देश को संबोधित करते हुए सबसे पहले कोरोना वायरस से जंग जीतने की बात कही और कोरोना वॉरियर्स को नमन किया। करीब 1 घंटे 27 मिनट लंबे भाषण में प्रधानमंत्री का फोकस कोरोना वायरस, आर्थिक विकास और आत्मनिर्भर भारत पर रहा। इस दौरान उन्होंने महिला शक्ति से लेकर डिजिटल इंडिया और लद्दाख में चीनी घुसपैठ से लेकर शिक्षा व्यवस्था तक पर बात की। उन्होंने चीन और पाकिस्तान पर निशाना साधते हुए करते हुए कहा कि एलओसी से लेकर एलएसी तक देश की संप्रभुता पर जिस किसी ने आंख उठाई है, देश की सेना ने उसका उसी भाषा में जवाब दिया है। पीएम मोदी ने देश को संबोधित करते हुए कहा कि भारत की संप्रभुता का सम्मान हमारे लिए सर्वोच्च है। इस संकल्प के लिए हमारे वीर जवान क्या कर सकते हैं, देश क्या कर सकता है, ये लद्दाख में दुनिया ने देखा है। आतंकवाद, विस्तारवाद का देश डटकर मुकाबला कर रहा है। भारत के जितने प्रयास शांति और सौहार्द के लिए हैं, उतनी ही प्रतिबद्धता अपनी सुरक्षा के लिए और अपनी सेना को मजबूत करने की है। भारत अब रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता के लिए भी पूरी क्षमता से जुट गया है। पीएम मोदी ने लाल किले से अपने संबोधन में बिना नाम लिए चीन पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि विस्तारवाद की सोच ने विस्तार की कई कोशिशें की। प्रधानमंत्री ने कहा कि विस्तावाद की सोच ने सिर्फ कुछ देशों को गुलाम बनाकर नहीं छोड़ा, बात उन्हीं पर खत्म नहीं हुई। प्रधानमंत्री ने कहा कि भीषण युद्धों और उसकी भयावहता के बीच भी भारत ने आजादी की जंग में कमी और नमी नहीं आने दी। इससे पहले पीएम ने संबोधन के दौरान कहा कि देश के वैज्ञानिक कोरोना की वैक्सीन बनाने में जुटे हुए हैं। पीएम ने कहा कि आज भारत में कोराना की एक नहीं, दो नहीं, तीन–तीन वैक्सीन इस समय टेस्टिंग के चरण में हैं। जैसे ही वैज्ञानिकों से हरी झंडी मिलेगी, देश की तैयारी उन वैक्सीन की बड़े पैमाने पर उत्पादन की है। जब कोरोना शुरू हुआ था तब देश में टेस्टिंग के लिए सिर्फ एक लैब थी। आज देश में 1,400 से ज्यादा लैब हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि से देश में एक और बहुत बड़ा अभियान शुरू होने जा रहा है। ये है नेशनल डिजिटल हेल्थ मिशन। नेशनल डिजिटल हेल्थ मिशन, भारत के हेल्थ सेक्टर में नई क्रांति लेकर आएगा। उन्होंने कहा कि आपके हर टेस्ट, हर बीमारी, आपको किस डॉक्टर ने कौन सी दवा दी, कब दी, आपकी रिपोर्ट्स क्या थीं, ये सारी जानकारी इसी एक हेल्थ कार्ड में समाहित होगी।

वोकल फॉर लोकल आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था का संचार करेगा

स्वतंत्रता दिवस पर देश को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि वोकल फॉर लोकल, री–स्किल और अप–स्किल का अभियान, गरीबी की रेखा के नीचे रहने वालों के जीवनस्तर में आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था का संचार करेगा। देश के जो 40 करोड़ जनधन खाते खुले हैं, उसमें से लगभग 22 करोड़ खाते महिलाओं के ही हैं। कोरोना के समय में अप्रैल–मई–जून, इन तीन महीनों में महिलाओं के खातों में करीब–करीब 30 हजार करोड़ रुपए सीधे ट्रांसफर किए गए हैं।

अगले 1000 दिनों में लक्षद्वीप सबमरिन ऑप्टिकल फाइबर केबल से जुड़ जाएगा

पीएम मोदी ने कहा कि हमारे देश में 1300 से अधिक द्वीप हैं। उनकी भौगोलिक स्थिति और राष्ट्र के विकास में उनके महत्व को ध्यान में रखते हुए, इनमें से कुछ द्वीपों में नई परियोजनाएं शुरू करने का काम चल रहा है। अगले 1000 दिनों में, लक्षद्वीप को सबमरिन ऑप्टिकल फाइबर केबल से भी जोड़ा जाएगा।

अयोध्या में एक भव्य राम मंदिर का निर्माण 10 दिन पहले शुरू हुआ

लाल किले से देश को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि अयोध्या में एक भव्य राम मंदिर का निर्माण 10 दिन पहले शुरू हुआ। रामजन्मभूमि मुद्दा जो सदियों से चला आ रहा है, शांति से हल हो गया है। देश के लोगों का आचरण अभूतपूर्व रहा है और भविष्य के लिए एक प्रेरणा है।

देश में एनसीसी का विस्तार होगा

पीएम मोदी ने कहा कि अब देश में एनसीसी का विस्तार किया जाएगा। एनसीसी को देश के 173 सीमाओं और तटीय जिलों तक सुनिश्चित किया जाएगा। इसमें भी करीब एक तिहाई बेटियों को ये स्पेशल ट्रेनिंग दी जाएगी।

लद्दाख आज विकास की नई ऊंचाइयों को छूने के लिए आगे बढ़ रहा

पीएम मोदी ने कहा कि लोकतंत्र की सच्ची ताकत स्थानीय इकाइयों में है। हम सभी के लिए गर्व की बात है कि जम्मू–कश्मीर में स्थानीय इकाइयों के जनप्रतिनिधि सक्रियता और संवेदनशीलता के साथ विकास के नए युग को आगे बढ़ा रहे हैं। बीते साल लद्दाख को केंद्र शासित प्रदेश बनाकर, वहां के लोगों की बरसों पुरानी मांग को पूरा किया गया है। हिमालय की ऊंचाइयों में बसा लद्दाख आज विकास की नई ऊंचाइयों को छूने के लिए आगे बढ़ रहा है। यह एक वर्ष जम्मू–कश्मीर के लिए विकास की नई यात्रा का वर्ष है।

जम्मू–कश्मीर में जल्द हो सकते हैं चुनाव

पीएम मोदी ने संबोधन के दौरान कहा कि यह एक वर्ष जम्मू और कश्मीर में महिलाओं और दलितों को मिले अधिकारों का वर्ष है। यह एक साल जम्मू–कश्मीर में शरणार्थियों के लिए सम्मान की जिंदगी का साल भी है। जम्मू–कश्मीर में परिसीमन की कवायद की जा रही है। देश इस काम को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है ताकि वहां चुनाव हो और लोगों के प्रतिनिधि चुने जाएं।

आत्मनिर्भर भारत की एक अहम प्राथमिकता– आत्मनिर्भर कृषि और आत्मनिर्भर किसान

पीएम मोदी ने इससे पहले कहा कि एक समय था, जब हमारी कृषि व्यवस्था बहुत पिछड़ी हुई थी। तब सबसे बड़ी चिंता थी कि देशवासियों का पेट कैसे भरें। आज हम सिर्फ भारत ही नहीं, दुनिया के कई देशों का पेट भर सकते हैं। किसानों ने कृषि क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बना दिया है। आत्मनिर्भर भारत की एक अहम प्राथमिकता है – आत्मनिर्भर कृषि और आत्मनिर्भर किसान। किसान को तमाम बंधनों से मुक्त करना हो वो काम हमने कर दिया है।

आधुनिक, नए और समृद्ध भारत के निर्माण में शिक्षा की अहम भूमिका

लाल किले से संबोधन में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि आधुनिक, नए और समृद्ध भारत के निर्माण में शिक्षा की अहम भूमिका है। इसलिए, हम तीन दशकों के बाद नई शिक्षा नीति लाए हैं, जिसका पूरे देश में स्वागत किया गया है, जो नए आत्मविश्वास को बढ़ाती है। 2014 से पहले केवल 5 दर्जन ग्राम पंचायतें ऑप्टिकल फाइबर से जुड़ी थीं। पिछले 5 वर्षों में, 1.5 लाख ग्राम पंचायतों को ऑप्टिकल फाइबर से जोड़ा गया है। आने वाले 1000 दिनों में, राष्ट्र के हर गांव को ऑप्टिकल फाइबर से जोड़ा जाएगा।

बेटियों की शादी के लिए न्यूनतम आयु पर पुनर्विचार करने के लिए समिति का गठन

पीएम मोदी ने अपने संबोधन में यह भी कहा कि जब भी महिलाओं को अवसर मिला, उन्होंने भारत को गौरवान्वित किया और इसे मजबूत बनाया। आज देश उन्हें रोजगार के समान अवसर प्रदान कर रहा है। आज महिलाएं कोयला खदानों में काम कर रही हैं, हमारी बेटियां लड़ाकू विमान उड़ाते हुए आसमान को छू रही हैं।हमने अपनी बेटियों की शादी के लिए न्यूनतम आयु पर पुनर्विचार करने के लिए समिति का गठन किया है। समिति अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करने के बाद उचित निर्णय लेगी।

सामान्य नागरिक की मेहनत का कोई मुकाबला नहीं

पीएम मोदी ने कहा कि देश के सामान्य नागरिक की मेहनत का कोई मुकाबला नहीं है। बीते 6 सालों में देश में मेहनत करने वाले लोगों के कल्याण के लिए कई योजनाएं चलाई गई हैं। बिना किसी भेद–भाव के, पूरी पारदर्शिता के साथ सभी लोगों को कई योजनाओं के द्वारा मदद पहुंचाई गई है।

दुनिया कोरोना काल में भी भारत पर भरोसा कर रही है

पीएम मोदी ने देश को संबोधित करते हुए यह भी कहा कि दुनिया कोरोना काल में भी भारत पर भरोसा कर रही है। भारत में सुधारों के दौर को दुनिया देख रही है। आज दुनिया इंटर–कनेक्टेड है। इसलिए समय की मांग है कि विश्व की अर्थव्यवस्था में भारत का योगदान बढ़ाना चाहिए, इसके लिए भारत को आत्मनिर्भर बनना ही है। जब हमारा अपना सामर्थ्य होगा तो हम दुनिया का कल्याण भी कर पाएंगे।

देश के युवाओं को अवसर मिल रहा है

पीएम मोदी ने इस दौरान यह भी कहा कि आज देश अनेक नए कदम उठा रहा है। इसलिए आप देखिए स्पेस सेक्टर को खुला कर दिया। देश के युवाओं को अवसर मिल रहा है। हमने कृषि क्षेत्र को बंधनों से मुक्त कर दिया।

हम एक–भारत, श्रेष्ठ–भारत व समावेशी भारत के निर्माण के लिए संकल्पित : योगी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी सुबह 9 बजे विधान भवन पर ध्वजारोहण किया। इसके अलावा प्रदेशभर में जगह–जगह झंडारोहण के कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस दौरान सीएम योगी ने संबोधित भी किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि 74वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर विधान भवन में आयोजित इस कार्यक्रम में उपस्थित प्रदेश सरकार के मंत्रीगण, अधिकारीगण, उपस्थित भाइयों, बहनों, आप सभी को 74वें स्वाधीनता दिवस के अवसर पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जिनके नेतृत्व में स्वाधीनता का आंदोलन चला था। सरदार पटेल, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, बाबा साहब डॉ. बी.आर.अम्बेडकर, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसे भारत माता के वीर सपूतों को कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करते हुए मैं विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। सीएम योगी ने कहा कि आज का दिन हम सबके लिए उत्साह और उमंग का दिन है। हम सब जानते हैं कि अनगिनत त्याग और बलिदान के फलस्वरूप 15 अगस्त 1947 को देश को स्वाधीनता प्राप्त हुई थी। मैं इस अवसर पर सत्य और अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी जी को कोटि–कोटि नमन करता हूं। मैं देश की सुरक्षा के लिए शहीद होने वाले उन सभी सपूतों को कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करते हुए, विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। सीएम ने कहा कि मैं इस अवसर पर भारत माता के उन सभी सैनिकों को कोटि–कोटि नमन करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं जिन्होंने देश की स्वाधीनता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए अपना बलिदान दिया है। सीएम योगी ने कहा कि कोविड–19 के खिलाफ देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में जिस प्रकार से व्यवस्थित रूप में कार्ययोजना प्रारम्भ हुई, उसी का परिणाम है कि दुनिया के अन्य देशों की तुलना में भारत, सुरक्षित और संतोषजनक स्थिति में है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज जब देश हर्षोल्लास के साथ अपना 74वां स्वतंत्रता दिवस मना रहा है तो दूसरी ओर हम सबके सामने वैश्विक महामारी कोविड–19 की त्रासदी भी है। सीएम ने कहा कि मैं इस अवसर पर हृदय से इन सभी का अभिनंदन करता हूं। जिन लोगों ने दूसरों की सेवा व जान बचाते हुए, संक्रमण की वजह से अपनी जान गंवाई है, ऐसे सभी कोरोना वॉरियर्स को भी मैं विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि कोविड–19 के खिलाफ देश की इस लड़ाई को आगे बढ़ाने के लिए कोरोना वॉरियर्स के रूप में हमारे जनप्रतिनिधियों, शासन–प्रशासन के अधिकारियों–कर्मचारियों, स्वास्थ्यकर्मियों, स्वच्छताकर्मियों, पुलिस और मिलिट्री से जुड़े जवानों ने सराहनीय कार्य किया है। सीएम योगी ने कहा कि जब देश 74वां स्वाधीनता दिवस मना रहा है, तब स्वाभाविक रूप से हम सबको देश की स्वाधीनता के महत्व को समझना होगा और इस स्वतंत्रता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए सार्थक प्रयास, प्रत्येक भारतवासी के स्तर पर हो सकते हैं, इसका भी अवश्य ध्यान रखना होगा। इससे पहले सीएम योगी ट्वीट कर स्वतंत्रता दिवस की सभी को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने लिखा–74वें स्वतंत्रता दिवस की समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं। अप्रतिम त्याग और बलिदान से मां भारती को ब्रितानी परतंत्रता से मुक्त कराने वाले हुतात्माओं को कोटिशः नमन। आइए, हम सभी आज के पावन अवसर पर एक भारत–श्रेष्ठ भारत–समावेशी भारत के निर्माण हेतु संकल्पित हों।

8 लाख की घूस लेते दो अधिकरी रंगे हाथों अरेस्ट

नोएडा। सीबीआई की ऐंटी करप्शन यूनिट गाजियाबाद ने नोएडा के ईपीएफओ कार्यालय में 2 अधिकारियों को रंगे हाथों 8 लाख की रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार किया गया है। नोएडा के सेक्टर 24 स्थित ईपीएफओ कार्यालय से एकाउंट अफसर नरेंद्र कुमार और एनफोर्समेंट अफसर ब्रजेश रंजन झा को ट्रैप लगाकर गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार दोनों अधिकारियों पर आरोप है कि उन्होंने नोएडा की एक निजी सिक्योरिटी कंपनी के बकाया 74 लाख के टेक्स को सेटल कराने के नाम पर 9 लाख की घूस मांगी थी लेकिन लेनदेन की रकम 8 लाख पर तय हुई। जिसके बाद शिकायतकर्ता ने इस मामले की शिकायत गाजियाबाद स्थित ऐंटी करप्शन यूनिट से की। शिकायत पर सीबीआई ने इस मामले में अकाउंट ऑफिसर और असिस्टेंट कमिश्नर ईपीएफओ के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया। उसके बाद सीबीआई ने ट्रैप लगाकर अकाउंट ऑफिसर और उसकी मदद करने वाले एनफोर्समेंट ऑफिसर को रंगे हाथों 8 लाख कैश के साथ गिरफ्तार किया है। सीबीआई ने इस संबंध में ईपीएफओ ऑफिस और दोनों ही गिरफ्तार आरोपियों के घर पर छानबीन भी की है। गिरफ्तार हुए अन्य अधिकारियों की भूमिका नरेंद्र कुमार और बृजेश रंजन झा की जांच भी कर रही है। को सीबीआई की टीम गाजियाबाद सीबीआई कोर्ट लेकर पहुंचे जहां उन्होंने सीबीआई के विशेष जज अमितवीर सिंह की कोर्ट में दोनों ही आरोपियों को पेश किया गया। इसके बाद कोर्ट ने दोनों को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। सीबीआई अब इस मामले की तफ्तीश कर रही है। साथ ही इस मामले में कार्यालय से जुड़े

बबली गोस्वामी
संपादक–क्राइम वीक

आप सभी को क्राइम वीक परिवार की ओर से

स्वतंत्रता दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएं

अपनी आज़ादी को हम हरगिज़ मिटा सकते नहीं
सर कटा सकते हैं लेकिन सर झुका सकते नहीं

मोहित गोस्वामी
ब्यूरो प्रमुख–क्राइम वीक

सम्पादकीय

भारत की आजादी

पिछड़ापन, आर्थिक असमानता, गरीबी, लाचारी और सर्वसुलभ न्याय दुर्लभ होने के कारण अब भी भारत की आजादी को अधूरी मानने वाले लोगों से हम सहमत हो या नहीं, मगर इतना तो मानना ही पड़ेगा कि 15 अगस्त 1947 को हमें जो आजादी मिली थी वह सचमुच अधूरी ही थी, क्योंकि आजादी की घोषणा केवल ब्रिटिश भारत के लिए की गई थी और लगभग 562 रियासतों वाले शेष भारत का भविष्य तब भी अधर में लटका हुआ था। देखा जाए तो जिस 15 अगस्त के दिन अंग्रेजों के खिलाफ आजादी की लड़ाई मुकाम तक पहुंची उसी दिन से देशी शासकों के अधिपत्य वाले रियासती भारत में आजादी की निर्णायक जंग शुरू हुई जो कि 1975 में सिक्किम के विलय तक जारी रही। मानने वाले तो 5 अगस्त 2019 को संविधान की धारा 370 और 35 ए के प्रावधानों की समाप्ति को ही आजादी के समय शुरू हुई विलय की प्रक्रिया की सम्पूर्णता मानते हैं। 15 अगस्त 1947 को जब भारत में नए लोकतांत्रिक युग का सूत्रपात हुआ उस समय भारत में दो तरह की शासन व्यवस्थाएं थीं। इनमें से एक देशी रियासतों की सामंती व्यवस्था और दूसरी ब्रिटिश शासन व्यवस्था थी। ब्रिटिश भारत भी बंगाल, मद्रास और बंबई प्रेसिडेंसियों तथा पूर्वी तथा पश्चिमी पाकिस्तान समेत भारत के 17 प्रोविन्सों में बंटा हुआ था। उस समय लगभग 562 देशी राज्य थे जिनमें कुल 27 की जनसंख्या वाली बिलबाड़ी रियासत भी थी तो इटली देश से बड़ी हैदराबाद रियासत भी थी जिसकी जनसंख्या उस समय 1.40 करोड़ थी। इनमें वे 35 हिमालयी रियासतें भी थीं जिनसे बाद में हिमाचल प्रदेश बना। एक अनुमान के अनुसार इन सभी रियासतों का क्षेत्रफल लगभग 7,12,508 वर्गमील या 11,40,013 वर्ग किमी था। कैबिनेट मिशन स्पष्ट कर चुका था कि देशी राज्यों को पौरामौंट्सी संधि के तहत आंतरिक और बाह्य सुरक्षा की जो गारंटी ब्रिटिश सरकार ने दे रखी है, वह 15 अगस्त 1947 को संधि के समाप्त होने पर स्वतः ही समाप्त हो जाएगी। सन् 1857 की गदर के बाद ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत का शासन ईस्ट इंडिया कंपनी से छीन कर अपने हाथ में लिए जाने के बाद जब 1876 के अधिनियम के तहत ब्रिटिश साम्राज्ञी को ''क्वीन एम्प्रेस ऑफ इंडिया'' या भारत की महारानी घोषित किया गया और राज्यहरण की नीति त्याग कर देशी रियासतों को आंतरिक और बाह्य सुरक्षा की गारंटी दी गई तो बदले में उनकी सार्वभौम सत्ता ब्रिटिश क्राउन में सन्निहित हो गई थी। इसमें देशी राज्यों के रक्षा, संचार, डाक एवं तार, रेलवे एवं वैदेशिक मामले ब्रिटिश हुकूमत में निहित हो गए थे। इसलिए सरदार पटेल और वीपी मेनन ने बहुत ही होशियारी से सबसे पहले देशी राज्यों को भारत संघ में मिलाने से पहले उनसे 'इंस्ट्रूमेंट ऑफ एक्सेशन' पर हस्ताक्षर करा कर स्वतंत्र निर्णय लेने के मामले में कानूनी तौर पर उनके हाथ बांध दिए थे। इसके बाद चरणबद्ध तरीके से उन सबका भारत संघ में विलय करा दिया गया। इस प्रक्रिया में उड़ीसा के 36 राज्यों का विलय 15 दिसंबर 1947 को तो कोल्हापुर और दक्कन ऐजेंसी के 17 राज्यों का विलय 8 मार्च 1948 को हुआ। सन् 1948 में ही सौराष्ट्र और काठियावाड़ की रियासतों का विलय हुआ। बुंदेलखंड और बाघेलखंड की 35 रियासतों का 13 मार्च 1948, राजपूताना की 19 रियासतों का विलय भी मार्च 1948 में, जोधपुर, जैसलमेर, जयपुर, एवं बीकानेर का 19 मार्च 1948 को, इंदौर, ग्वालियर झाबुआ एवं देवास का जून 1949 में, पंजाब की 6 रियासतों का 1948 में, उत्तर पूर्व के मणिपुर का 21 सितंबर 1948 में, त्रिपुरा का 9 सितम्बर 1949 में, कूच बिहार का 30 अगस्त 1949 में विलय हुआ। बड़े राज्यों में से हैदराबाद का पुलिस कार्यवाही के बाद 18 सितंबर 1948 को अधिग्रहण किया गया। जबकि त्रावनकोर–कोचीन 27 मई 1949, कोल्हापुर फरबरी 1949 तथा मैसूर का विलय 25 नवंबर 1949 को तथा हिमालयी राज्य टिहरी का विलय 1 अगस्त 1949 को हुआ।

हिमाचल प्रदेश का गठन करने से पहले 1948 में ही वहां की 27 रियासतों का संघ बना कर उसे केंद्रीय शासन के तहत लाया गया। ब्रिटिश भारत में जहां कांग्रेस आजादी के लिए लड़ रही थी वहीं रियासतों में कांग्रेस के ही दिशा निर्देशन में प्रजामंडल सक्रिय थे। इन प्रजामंडलों का संचालन सन् 1927 में बंबई में गठित ''अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद'' (ऑल इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कान्फ्रेंस) कर रही थी। इसकी कमान पंडित जवाहरलाल नेहरू ने सन् 1939 में स्वयं संभाली जो कि 1946 तक इसके अध्यक्ष रहे। नेहरू के बाद डॉ. पट्टाभि सीतारमैया ने परिषद की कमान संभाली जो कि 25 अप्रैल सन् 1948 में लोक परिषद के कांग्रेस में विलय के समय तक इसके अध्यक्ष रहे। इसी लोक परिषद के तहत पंजाब हिल्स की टिहरी समेत हिमाचल की 35 रियासतों के प्रजामंडलों के दिशा–निर्देशन के लिए ''हिमालयन हिल स्टेट्स रीजनल काउंसिल'' का गठन किया गया। दरअसल, देशी रियासतें ब्रिटिश हुकूमत के लिए 'बफर स्टेट्स' के समान थी। सन् 1857 की गदर के दौरान देशी शासकों ने अंग्रेजों का साथ देकर उन्हें अहसास दिला दिया था कि भारत पर शासन करना है तो राज्य हरण की नीति पर चलने के बजाय उनसे मिलकर चलने में ही अंग्रेजी हुकूमत की भलाई है। अंग्रेजों का इन पर नियंत्रण भी था और इनके प्रति सुरक्षा के अलावा कोई खास जिम्मेदारी भी नहीं थी। अंग्रेजी हुकूमत ने पैरामौंटसी हासिल कर देशी शासकों को दंडित करने और उनके उत्तराधिकारी के चयन का अधिकार अपने पास रख कर सार्वभौमिकता साथ ही उनकी वफादारी भी गिरवी रख दी थी। सन् 1921 में माउटेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार के तहत देशी शासकों को अपनी जरूरतों और आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति के लिए 'चौम्बर ऑफ प्रिंसेज' का गठन हो चुका था, जिसे 'नरेंद्र मंडल' भी कहा जाता था। इसके पहले चांसलर बिकानेर के महाराजा गंगा सिंह बने। जवाहर लाल नेहरू ने स्वतंत्र भारत का संविधान बनाने के लिए जब देशी राज्यों से संविधान सभा में अपने प्रतिनिधि भेजने की अपील की तो भोपाल के नवाब, जो कि उस समय ष्नरेंद्र मंडलष् के चांसलर भी थे, ने अपील ठुकरा दी। जबकि बीकानेर के महाराजा ने सबसे पहले अपना प्रतिनिधि संविधान सभा के लिए मनोनीत कर दिया। उसके बाद पटियाला, बड़ोदा, जयपुर और कोचीन के प्रतिनिधियों के संविधान सभा में शामिल होने से इन राज्यों की नई व्यवस्था के साथ चलने की शुरुआत हो गई। तत्कालीन गर्वनर जनरल माउंटबेटन ने चौम्बर ऑफ प्रिंसेज की बैठक में साफ कह दिया था की राज्यों का अपना अलग अस्तित्व बनाए रखना अब व्यवहारिक नहीं रह गया है, इसलिए इन राज्यों को भारत या पाकिस्तान में से किसी के साथ भौगोलिक सम्बद्धता के अनुसार मिल जाना चाहिए। चूंकि जितने देशी राज्य उतने प्रांत बनाना संभव नहीं था इसलिए पूर्ण रूप से भारत संघ में इनके विलय से पहले एकीकरण की कार्यवाही की गई और विलीनीकरण या मर्जर से पहले 'इंट्रूमेण्ट ऑफ एक्सेशन' पर देशी शासकों से हस्ताक्षर करा कर पटेल और मेनन ने एक तरह से उनकी सार्वभौमिकता हासिल कर ली, जिसके तहत देशी राज्यों ने सुरक्षा, यातायात और वैदेशिक मामलों के अधिकार भारत संघ को सौंप दिए मगर उनकी आंतरिक स्वायत्तता बरकरार रही। इस तरह भारत संघ में मिलने वाले 554 देशी राज्यों में से 551 तो इंस्ट्रूमेण्ट ऑफ एक्सेशन पर हस्ताक्षर के बाद शांतिपूर्ण ढंग से भारत संघ में विलीन हो गए। लेकिन हैदराबाद और भोपाल के विलय में मामूली बल का प्रयोग करना पड़ा।

'मैं अपने देश को आजाद कराऊंगा'

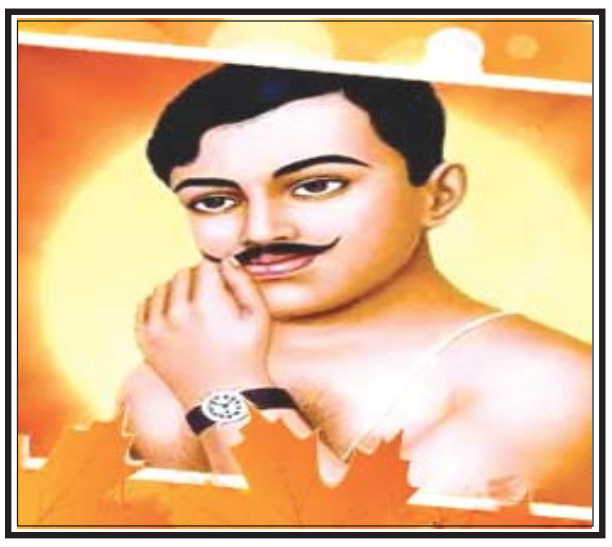

नई दिल्ली। आज हम जिस आजादी के साथ सुख–चैन की जिन्दगी गुजार रहे हैं, वह असंख्य जाने–अनजाने देशभक्त शूरवीर क्रांतिकारियों के असीम त्याग, बलिदान एवं शहादतों की नींव पर खड़ी है। ऐसे ही अमर क्रांतिकारियों में शहीद भगत सिंह शामिल थे, जिनका नाम लेने मात्र से ही सीना गर्व एवं गौरव से चौड़ा हो जाता है। उनका जन्म 28 सितम्बर, 1907 को पंजाब के जिला लायलपुर के बंगा गाँव (पाकिस्तान) में एक परम देशभक्त परिवार में हुआ। सरदार किशन सिंह के घर श्रीमती विद्यावती की कोख से जन्मे इस बच्चे को दादा अर्जुन सिंह व दादी जयकौर ने 'भागों वाला' कहकर उसका नाम 'भगत' रख दिया। बालक भगत को भाग्य वाला बच्चा इसीलिए माना गया था, क्योंकि उसके जन्म लेने के कुछ समय पश्चात् ही, स्वतंत्रता सेनानी होने के कारण लाहौर जेल में बंद उनके पिता सरदार किशन सिंह को रिहा कर दिया गया और जन्म के तीसरे दिन दोनों चाचाओं को जमानत पर छोड़ दिया गया।

बालक भगत सिंह में देशभक्त परिवार के संस्कार कूट–कूटकर भरे हुए थे। एक बार उनके पिता सरदार किशन सिंह उन्हें अपने मित्र मेहता के खेत में लेकर चले गए। दोनों मित्र बातों में मशगूल हो गए। इस बीच भगत सिंह ने खेल–खेल में खेत में छोटी–छोटी डोलियों पर लकड़ियों के छोटे छोटे तिनके गाड़ दिए। यह देखकर मेहता हतप्रभ रह गए। उन्होंने पूछा कि यह क्या बो दिया है, भगत? बालक भगत ने तपाक से उत्तर दिया कि 'मैंने बन्दूकें बोई हैं। इनसे अपने देश को आजाद कराऊंगा'। कमाल की बात यह है कि उस समय भगत की उम्र मात्र तीन वर्ष ही थी। भारत माँ को परतन्त्रता की बेड़ियों से मुक्त कराने वाले इस लाल की ऐसी ही देशभक्ति के रंग में रंगी अनेक मिसालें हैं। पाँच वर्ष की आयु हुई तो उनका नाम पैतृक बंगा गांव के जिला बोर्ड प्राइमरी स्कूल में लिखाया गया। जब वे ग्यारह वर्ष के थे तो उनके साथ पढ़ रहे उनके बड़े भाई जगत सिंह का असामयिक निधन हो गया। इसके बाद सरदार किशन सिंह सपरिवार लाहौर के पास नवाकोट चले आए। प्राइमरी पास कर चुके बालक भगत सिंह को सिख परम्परा के अनुसार खालसा–स्कूल की बजाय राष्ट्रीय विचारधारा से ओतप्रोत लाहौर के डी.ए.वी. स्कूल में दाखिला दिलवाया गया। इसी दौरान 13 अप्रैल, 1919 को वैसाखी वाले दिन 'रौलट एक्ट' के विरोध में देशवासियों की जलियांवाला बाग में भारी सभा हुई। जनरल डायर के क्रूर व दमनकारी आदेशों के चलते निहत्थे लोगों पर अंग्रेजी सैनिकों ने ताड़बतोड़ गोलियों की बारिश कर दी। इस अत्याचार ने देशभर में क्रांति की आग को और भड़का दिया। भगत सिंह ने अमृतसर के जलियांवाला बाग की रक्त–रंजित मिट्टी की कसम खाई कि वह इन निहत्थे लोगों की हत्या का बदला अवश्य लेकर रहेगा। सन् 1920 में गांधी जी ने असहयोग आन्दोलन चलाया और देशवासियों से आह्वान किया कि विद्यार्थी सरकारी स्कूलों को छोड़ दें व सरकारी कर्मचारी अपने पदों से इस्तीफा दे दें। उस समय नौंवी कक्षा में पढ़ रहे भगत सिंह ने सन् 1921 में गांधी जी के आह्वान पर डी.ए.वी. स्कूल को छोड़ लाला लाजपतराय द्वारा लाहौर में स्थापित नैशनल कॉलेज में प्रवेश ले लिया। इस कॉलेज में आकर भगत सिंह यशपाल, भगवती चरण, सुखदेव, रामकिशन, तीर्थराम, झण्डा सिंह जैसे क्रांतिकारी साथियों के सम्पर्क में आए। कॉलेज में लाला लाजपत राय व परमानंद जैसे देशभक्तों के व्याख्यानों ने देशभक्ति का अद्भुत संचार किया। कॉलेज के प्रो. विद्यालंकार जी भगत सिंह से विशेष स्नेह रखते थे। वस्तुतः प्रो. जयचन्द विद्यालंकार ही भगत सिंह के राजनीतिक गुरु थे। भगत सिंह उन्हीं के दिशा–निर्देशन में देशभक्ति के कार्यक्रमों में सक्रिय भूमिका निभाते थे। इसी समय घरवालों ने भगत सिंह पर शादी का दबाव डाला तो उन्होंने विवाह से साफ इनकार कर दिया। जब हद से ज्यादा दबाव पड़ा तो देशभक्ति में रमे भगत सिंह देश की आजादी के अपने मिशन को पूरा करने के उद्देश्य से 1924 में बी.ए. की पढ़ाई अधूरी छोड़कर कॉलेज से भाग गए। फिर वे केवल और केवल देशभक्तों के साथ मिलकर स्वतंत्रता के संघर्ष में जूट गए। कॉलेज से भागने के बाद भगत सिंह सुरेश्चन्द्र भट्टाचार्य, बटुकेश्वर दत्त, अजय घोष, विजय कुमार सिन्हा जैसे प्रसिद्ध क्रांतिकारियों के सम्पर्क में आए। इसी के साथ भगत सिंह उत्तर प्रदेश व पंजाब के क्रांतिकारी युवकों को संगठित करने में लग गए। इसी दौरान भगत सिंह ने 'प्रताप' समाचार पत्र में बतौर संवाददाता अपनी भूमिका खूब निभाई। इन्हीं गतिविधियों के चलते भगत सिंह की मुलाकात भारतीय इतिहास के महान क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद से हुई। भगत सिंह के परिवार वालों ने काफी खोजबीन करके भगत सिंह से लिखित वायदा किया कि वह घर वापिस आ जाए, उस पर शादी करने के लिए कोई दबाव नहीं डाला जाएगा। परिवार वालों के इस लिखित वायदे व दादी जी के सख्त बीमार होने के समाचार ने भगत सिंह को वापिस घर लौटने के लिए बाध्य कर दिया। घर आकर वे पंजाब भर में घूम–घूमकर समाज की समस्याओं से अवगत होने लगे। सन् 1925 के अकाली आन्दोलन ने भगत सिंह को फिर सक्रिय कर दिया। अंग्रेज सरकार ने झूठा केस तैयार करके भगत सिंह के नाम गिरफ्तारी वारन्ट जारी कर दिया। भगत सिंह पंजाब से लाहौर पहुंच गए और क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय होकर अंग्रेज सरकार की नाक में दम करने लगे। 1 अगस्त, 1925 को 'काकोरी–काण्ड' हुआ। 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' के सदस्यों द्वारा पार्टी के लिए धन एकत्रित करने के उद्देश्य से हरदोई से लखनऊ जा रही 8 डाऊन रेलगाड़ी के खजाने को लूट लिया गया। इस काण्ड में कुछ क्रांतिकारी पकड़े गए। पकड़े गए क्रांतिकारियों को छुड़ाने के लिए भगत सिंह ने भरसक प्रयत्न किए, लेकिन उन्हें सफलता हासिल नहीं हो सकी। मार्च, 1926 में उन्होंने लाहौर में समान क्रांतिकारी विचारधारा वाले युवकों को संगठित करके 'नौजवान सभा' का गठन किया और इसके अध्यक्ष का उत्तरदायित्व रामकृष्ण को सौंप दिया। रामकृष्ण औपचारिक अध्यक्ष थे, जबकि मूल रूप से संचालन भगत सिंह स्वयं ही करते थे। फिर इसकी शाखाएं देश के अन्य हिस्सों में भी खोली गईं। जून, 1928 में इसी तर्ज पर भगत सिंह ने लाहौर में ही 'विद्यार्थी यूनियन' बनाई और क्रांतिकारी नौजवानों को इसका सदस्य बनाया। अंग्रेजी सरकार भगत सिंह के कारनामों से बौखलाई हुई थी। वह उन्हें गिरफ्तार करने का बहाना ढूंढ़ रही थी। उसे यह बहाना 1927 के दशहरे वाले दिन मिल भी गया। जब भगत सिंह तितली बाग से लौट रहे थे तो किसी ने दशहरे पर लगे मेले में बम फेंक दिया। भगत सिंह पर झूठा इल्जाम लगाकर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। वस्तुतः पुलिस के इशारों पर वह बम चन्नणदीन नामक एक अंग्रेज पिट्ठू ने फेंका था। भगत सिंह को गिरफ्तार करके बिना मुकद्मा चलाए उन्हें लाहौर जेल में रखा गया और उसके बाद उन्हें बोस्टल जेल भेज दिया गया। पुलिस की लाख साजिशों के बावजूद भगत सिंह जमानत पर छूट गए। जमानत मिलने के बाद भी भगत सिंह सक्रिय क्रांतिकारी गतिविधियों का संचालन करते रहे। 8 अगस्त, 1928 को देशभर के क्रांतिकारियों की बैठक फिरोजशाह कोटला में बुलाई गई। भगत सिंह के परामर्श पर 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' का नाम बदलकर 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' रख दिया गया। इस बैठक में क्रांतिकारियों ने कई अहम् प्रस्ताव पारित किए। एसोसिएशन का मुख्य कार्यालय आगरा से झांसी कर दिया गया। भगत सिंह ने कई अवसरों पर बड़ी चालाकी से वेश बदल कर अंग्रेज सरकार को चकमा दिया। 30 अक्तूबर, 1928 को लाहौर पहुंचे साइमन कमीशन का विरोध लाला लाजपतराय के नेतृत्व में भगत सिंह सहित समस्त क्रांतिकारियों व देशभक्त जनता ने डटकर किया। पुलिस की दमनात्मक कार्यवाही में लाला जी को गंभीर चोटें आईं और लाख कोशिशों के बावजूद उन्हें बचाया नहीं जा सका। 17 नवम्बर, 1928 को लाला जी स्वर्ग सिधार गए। क्रांतिकारियों का खून खौल उठा। इस कार्यवाही के सूत्रधार स्कॉट को मारने के लिए क्रांतिकारियों ने 17 दिसम्बर, 1928 को व्यूह रचा, लेकिन स्कॉट की जगह साण्डर्स धोखे में मार दिया गया। इस काम को भगत सिंह ने जयगोपाल, राजगुरु आदि के साथ मिलकर अंजाम दिया था। इसके बाद तो पुलिस भगत सिंह के खून की प्यासी हो गई। आगे चलकर इन्हीं देशभक्त व क्रांतिकारी भगत सिंह ने कुछ काले बिलों के विरोध में असेम्बली में बम फेंकने जैसी ऐतिहासिक योजना की रूपरेखा तैयार की। क्रांतिकारियों से लंबे विचार–विमर्श के बाद भगत सिंह ने स्वयं बम फेंकने की योजना बनाई, जिसमें बटुकेश्वर दत्त ने उनका सहयोग किया। 'बहरों को अपनी आवाज सुनाने के लिए' भगत सिंह व बटुकेश्वर दत्त ने 8 अप्रैल, 1929 को निश्चित समय पर पूर्व तय योजनानुसार असैम्बली के खाली प्रांगण में हल्के बम फेंके, समाजवादी नारे लगाए, अंग्रेजी सरकार के पतन के नारों को बुलन्द किया और पहले से तैयार छपे पर्चे भी फेंके। योजनानुसार दोनों देशभक्तों ने खुद को पुलिस के हवाले कर दिया ताकि वे खुलकर अंग्रेज सरकार को न्यायालयों के जरिए अपनी बात समझा सकें। 7 मार्च, 1929 को मुकद्मे की सुनवाई अतिरिक्त मजिस्ट्रट मिस्टर पुल की अदालत में शुरू हुई। दोनों वीर देशभक्तों ने भरी अदालत में हर बार 'इंकलाब जिन्दाबाद' के नारे लगाते हुए अपने पक्ष को रखा। अदालत ने भारतीय दण्ड संहिता की धारा 307 के अन्तर्गत मामला बनाकर सेशन कोर्ट को सौंप दिया। 4 जून, 1929 को सेशन कोर्ट की कार्यवाही शुरू हुई। दोनों पर गंभीर आरोप लगाए गए। क्रांतिकारी भगत सिंह व बटुकेश्वर दत्त ने हर आरोप का सशक्त खण्डन किया। अंत में 12 जून, 1929 को अदालत ने अपना 41 पृष्ठीय फैसला सुनाया, जिसमें दोनों क्रांतिकारियों को धारा 307 व विस्फोटक पदार्थ की धारा 3 के अन्तर्गत उम्रकैद की सजा दी। इसके तुरंत बाद भगत सिंह को पंजाब की मियांवाली जेल में और बटुकेश्वर दत्त को लाहौर सेन्ट्रल जेल में भेज दिया गया। इन क्रांतिकारियों ने अपने विचारों को और ज्यादा लोगों तक पहुंचाने के लिए हाईकोर्ट में सेशन कोर्ट के फैसले के खिलाफ अपील की। अंततः 13 जनवरी, 1930 को हाईकोर्ट ने भी सुनियोजित अंग्रेजी षड़यंत्र के तहत उनकी अपील खारिज कर दी। इसी बीच जेल में भगत सिंह ने भूख हड़ताल शुरू कर दी। इसी दौरान 'साण्डर्स– हत्या' केस की सुनवाई शुरू की गई। एक विशेष न्यायालय का गठन किया गया। अपने मनमाने फैसले देकर अदालत ने भगत सिंह के साथ राजगुरु व सुखदेव को लाहौर षड़यंत्र केस में दोषी ठहराकर सजाए मौत का हुक्म सुना दिया। पं. मदन मोहन मालवीय ने फैसले के विरुद्ध 14 फरवरी, 1931 को पुनः हाईकोर्ट में अपील की। लेकिन अपील खारिज कर दी गई। जेल में भगत सिंह से उनके परिवार वालों से मिलने भी नहीं दिया गया। भगत सिंह का अपने परिवार के साथ अंतिम मिलन 3 मार्च, 1931 को हो पाया था। इसके बीस दिन बाद 23 मार्च, 1931 को जालिम अंग्रेजी सरकार ने इन क्रांतिकारियों को निर्धारित समय से पूर्व ही फांसी के फन्दे पर लटका दिया और देश में कहीं क्रांति न भड़क जाए, इसी भय के चलते उन शहीद देशभक्तों का दाह संस्कार भी फिरोजपुर में चुपके–चुपके कर दिया। इस तरह सरदार भगत सिंह 'शहीदे आज़म' के रूप में भारतीय इतिहास में सदा सदा के लिए अमर हो गये। कल भी सरदार भगत सिंह सबके आदर्श थे, आज भी हैं और आने वाले कल में भी रहेंगे, क्योंकि उन जैसा क्रांतिवीर न कभी पैदा हुआ है और न कभी होगा।

रेजांग–ला में भारतीय जांबाजों ने उखाड़ दिए थे दुश्मनों के पैर

नई दिल्ली। रेजांग–ला में भारतीय जांबाजों ने अदम्य साहस का परिचय देते हुए दुश्मनों के पैर उखाड़ दिए थे। उनकी वीरता की कहानी वर्ष 1980 तक देश के सामने नहीं आई थी, लेकिन रेवाड़ी के कुछ प्रबुद्ध लोगों ने सैन्य इतिहास में झांककर इस स्वर्णिम इतिहास को दुनिया के सामने सार्वजनिक किया। सबसे पहले रेवाड़ी के पूर्व विधायक रघु यादव ने रेजांग–ला के कुछ पन्ने टटोले थे और इस बात को प्रचारित करना शुरू किया। कुछ समय बाद कर्नल रामसिंह की अगुआई में रेजांग–ला शौर्य समिति का गठन हुआ। कैप्टन अजय सिंह यादव जैसे वरिष्ठ नेता भी इस समिति से जुड़े।

एक समय ऐसा आया जब दो समितियां बन गईं, लेकिन रेजांग–ला के वीरों का यशोगान होता रहा और आज भी हो रहा है। रेजांग–ला शौर्य समिति के महासचिव नरेश चौहान एडवोकेट के अनुसार समिति के प्रयास के सकारात्मक परिणाम रहे। न केवल भारत सरकार ने इन वीरों की वीरता को सम्मान देना शुरू किया बल्कि सेना ने भी अपने जांबाजों को नमन करने के लिए रेवाड़ी की वीरभूमि को पूरा महत्व दिया। लेफ्टिनेंट जनरल स्तर के कई अधिकारी रेजांग–ला स्मारक पर आ चुके हैं। शहीदों के सम्मान में हर वर्ष 18 नवंबर को रेजांग–ला शौर्य समिति यहां कार्यक्रम का आयोजन करती है। इन वीरों की स्मृति में रेवाड़ी में विशाल रेजांग–ला पार्क का भी निर्माण किया गया है। विभिन्न देशों के बीच अतीत से लेकर वर्तमान तक कई युद्ध लड़े गए, लेकिन हम यहां जिस रेजांग–ला युद्ध का जिक्र कर रहे हैं उसमें भाग लेने वाले जवानों की वीरगाथा दुनिया के युद्ध इतिहास में अद्वितीय है। पराक्रम के मामले में इन जवानों की कहानी हर लिहाज से अनूठी है। लद्दाख की दुर्गम बफीली चोटी पर वर्ष में मां भारती के 124 वीरों ने सैन्य इतिहास का स्वर्णिम अध्याय लिखा था। यह इन जवानों की वीरता का ही परिणाम था, जिसके चलते संसाधनों में इक्कीस होते हुए भी चीन युद्ध विराम के लिए सहमत हो गया था।1चीनी आक्रमण के समय 18 नवंबर को लद्दाख की बर्फीली चोटी पर स्थित रेजांग–ला पोस्ट पर जिस तरह की वीरता भारतीय वीरों ने दिखाई थी, उस पर सहसा यकीन नहीं होता। एक ओर आधुनिक हथियारों से लैस तीन हजार चीनी सैनिक थे तो दूसरी ओर मुट्ठीभर भारतीय जवान, लेकिन इन वीरों ने चीनी सैनिकों को गाजर–मूली की तरह काट दिया था। उधर भौगोलिक परिस्थितियों और बर्फीले मौसम के अभ्यस्त जवान थे और इधर मैदानी भाग से गए हमारे सैनिक। इस युद्ध में तत्कालीन 13 कुमाऊं बटालियन के 124 जवानों में से जवान देश के लिए कुर्बान हो गए थे। हथियारों में भले ही चीनी हमसे आगे थे, लेकिन हौसले के मामले में हम इक्कीस थे। भारतीय वीरों के सामने परीक्षा की घड़ी 17 नवंबर की रात तब आई थी, जब तूफान के कारण रेजांग–ला दर्रा की बर्फीली चोटी पर मोर्चा संभाल रहे इन जवानों का संपर्क बटालियन मुख्यालय से टूट गया। विषम परिस्थितियों के बीच ही 18 नवंबर को तड़के चार बजे युद्ध शुरू हो गया, लेकिन किसी को रेजांग–ला पोस्ट पर चल रहे ऐतिहासिक युद्ध की जानकारी नहीं मिल पाई। 18 हजार फुट ऊंची पोस्ट पर इस युद्ध में भारतीय जांबाजों की वीरता के सामने चीनी सेना कांप उठी। रेजांग–ला पोस्ट पर दिखाई गई वीरता का सम्मान करते हुए ही भारत सरकार ने कंपनी कमांडर मेजर शैतान सिंह को जहां मरणोपरांत देश के सर्वोच्च वीरता पुरस्कार पदक परमवीर चक्र से अलंकृत किया था, वहीं इस बटालियन के आठ अन्य जवानों को वीर चक्र, चार को सेना मेडल व एक को मैंशन इन डिस्पेच का सम्मान प्रदान किया गया था। 13 कुमायूं के कमांडिंग अफसर (सीओ) को अति विशिष्ट सेवा मेडल (एवीएसएम) से अलंकृत किया था। देश के सैन्य इतिहास में आज तक किसी भी एक बटालियन को एक साथ वीरता के लिए इतने पदक नहीं मिले। सरकार ने बाद में रेजांग–ला के शहीदों को सम्मान देने के लिए कंपनी का नाम रेजांग–ला कंपनी कर दिया था। रेजांग–ला युद्ध में शहीद हुए वीरों में मेजर शैतान सिंह (परमवीर चक्र) राजस्थान के जोधपुर के निवासी थे, जबकि नर्सिंग सहायक धर्मपाल सिंह दहिया (वीर चक्र) हरियाणा के सोनीपत के रहने वाले थे। कंपनी का सफाई कर्मचारी पंजाब का रहने वाला था, जबकि शेष सभी जवान रेवाड़ी, महेंद्रगढ़ व अलवर के रहने वाले थे।

'भारत मां की सेवा करने जा रहा हूं, शहीद हो गया तो रोना नहीं'

मुरादनगर। कारगिल युद्ध के दौरान सिपाही सुरेंद्र पाल यादव अपने साथी हवलदार रामेश्वर प्रसाद व चार अन्य जवानों के साथ द्रास सेक्टर में तोलोलिंग की पहाड़ी पर मोर्चा संभाले हुए थे। पहाड़ी के ऊपर से गोलियों की बौछार हो रही थी, जान की परवाह किए बिना इन जांबाजों के कदम आगे बढ़ते जा रहे थे। विषम परिस्थितियों में भी इन रणबांकुरों का जोश कम नहीं हुआ था। ऊंचाई पर होने के कारण पाकिस्तानी सैनिक उनकी हर गतिविधि पर नजर रखे हुए थे। अचानक दुश्मन की ओर से आए एक मोर्टार के फटने से सुरेंद्र व उनके दो अन्य साथी शहीद हो गए। 3 जुलाई 1999 को शहीद सुरेंद्र पाल यादव का पार्थिव शरीर तिरंगे में लिपटकर उनके पैतृक गांव पहुंचा, जहां राजकीय सम्मान के साथ उन्हें अंतिम सलामी दी गई। कारगिल युद्ध शुरू होने से पहले सुरेंद्र दो माह की छुट्टी लेकर अपने गांव आए थे। जब वह वापस जाने की तैयारी कर रहे थे तो उनकी नजर मां चंपा देवी के चेहरे पर पड़ी। मां की आंखें नम थीं। सुरेंद्र ने उनका हौसला बढ़ाते हुए कहा, 'मां घबराओं मत, अब मैं भारत मां की सेवा करने जा रहा हूं। जल्द ही वापस आऊंगा। अगर शहीद हो गया तो रोना नहीं।' मां को अपने बेटे पर गर्व है। वह कहती हैं कि अपने दो लाल देश की सेवा के लिए भेजे थे। एक बेटा देश की सेवा करते हुए शहीद हो गया। उसे खोने का गम तो हुआ, लेकिन देश की सेवा के लिए बेटे की शहादत से बड़ा कोई गर्व नहीं हो सकता। सुरेंद्र का जन्म 3 मार्च 1977 को गांव सुराना में किसान टेकराम सिंह के यहां हुआ था। परिवार में मां चंपा देवी, बड़े भाई वीरेंद्र कुमार, छोटे भाई नरेंद्र व जितेंद्र कुमार हैं। नरेंद्र फरवरी 1997 में सेना में भर्ती हुए। छोटे भाई के सेना में जाने पर सुरेंद्र के मन में देशप्रेम की भावना और जागृत हुई। वह अगस्त 1997 में सेना का हिस्सा बने। मई 1999 में कारगिल युद्ध शुरू हो गया था। नरेंद्र की पोस्टिंग चीन सीमा के पास स्थित तवांग क्षेत्र में और 1 नागा रेजीमेंट में सिपाही सुरेंद्र पाल यादव की पोस्टिंग जम्मू–कश्मीर के द्रास सेक्टर में थी। 1 जुलाई 1999 को हवलदार रामेश्वर प्रसाद, सिपाही सुरेंद्र व चार अन्य जवानों के साथ तोलोलिंग पहाड़ी पर मोर्चा संभाले हुए थे। पाक सैनिकों को मुंहतोड़ जवाब दिया जा रहा था। अचानक पाकिस्तानी सेना द्वारा दागा गया एक मोर्टार वहां आकर गिरा और फट गया।

पाक के साथ हुए इस प्रथम युद्ध में

बलवंत ने गोलियां खत्म होने के बाद भी संभाला था मोर्चा

नई दिल्ली। देश को आजाद हुए दो साल ही हुए थे। कश्मीर में अशांति फैलाने के लिए पाकिस्तान कोई कसर नहीं छोड़ रहा था। आखिरकार उसे जवाब देने के लिए भारतीय सैनिकों ने 1949 में मोर्चा संभाल लिया। इन जांबाजों में बलवंत सिंह भी शामिल थे। पाकिस्तान के साथ हुए इस प्रथम युद्ध में बलवंत ने गोलियां खत्म होने के बावजूद हार नहीं मानी। वे पत्थर लेकर दुश्मन की ओर दौड़े और उन्हें पीछे हटने को मजबूर कर दिया। पिता के रणकौशल का जिक्र करते–करते उनके बेटे नरेंद्र टटेसर की आंखों में जैसे चमक आ जाती है। कहतें है, पिताजी सच्चे देशप्रेमी थी, उन्होंने पूरा जीवन देश की सेवा में गुजार दिया। बलवंत सिंह का जन्म मुंडका इलाके के टटेसर गांव में मध्यमवर्गीय जमींदार परिवार में हुआ था। 12वीं करने के बाद सेना में जाट रेजीमेंट में शामिल हुए। नरेंद्र बताते हैं कि उनके पिताजी 1949 की जंग की कहानी बार–बार सुनाते थे। कहते थे कि वह युद्ध बहुत कठिन परिस्थितियों में लड़ा गया था। बलवंत सिंह की पोस्टिंग कश्मीर की जिस घाटी में थी, वहां से एक नदी पाकिस्तान की ओर जा रही थी। नदी के रास्ते हो रही घुसपैठ पर निगरानी रखने के लिए बलवंत एक सैनिक के साथ वहां तैनात थे। मौसम खराब था और बर्फबारी भी हो रही थी। अचानक शांत वातावरण में आवाज आने लगी। बलवंत सिंह ने देखा की चार–पांच पाकिस्तानी सैनिक नदी पार कर भारतीय सीमा में घुसने की कोशिश कर रहे हैं। टेंट में चाय बनाने गए साथी सैनिक का इंतजार कर रहे बलवंत ने तुरंत संकेत के रूप में एक कंकड़ अपने कैंप की तरफ फेंका। साथी सैनिक संकेत पाते ही सचेत हो गए। इसी दौरान बलवंत ने पाकिस्तानी सैनिकों पर फायरिंग शुरू कर दी। बलवंत की सभी गोलियां खत्म हो गईं तो वह पाक सैनिकों के पास आने का इंतजार करने लगे। एक पाकिस्तानी सैनिक जैसे ही नजदीक पहुंचा बलवंत ने भारी पत्थर उसके ऊपर फेंका। कंधे पर पत्थर लगते ही पाक सैनिक नदी में समा गया। तब तक बलवंत के साथी जवानों ने भी मोर्चा संभाल लिया था। भारतीय जांबाजों के हमले से घबराकर बचे हुए पाकिस्तानी सैनिक खराब मौसम का फायदा उठाकर भाग गए। नदी के रास्ते सर्च ऑपरेशन के दौरान बलवंत सिंह खुद भी फिसलकर नदी में गिर गए। सौभाग्य से उनके शरीर का ऊपरी हिस्सा बाहर रह गया। वह रातभर बेहोशी की हालत में नदी के किनारे पड़े रहे। अगले दिन बचाव दल उनके पास तक पहुंचा।

मेजर शैतान सिंह का नाम सुन आज भी कांप जाते हैं दुश्मन

नई दिल्ली। भारत अब तक पाकिस्तान के साथ तीन जंग लड़ चुका है और तीनों में पाकिस्तान हारा है। हालांकि, चीन के साथ 1962 की जंग भारत जरूर हार गया था, लेकिन आज भी चीन की सेना मेजर शैतान सिंह का नाम सुनकर कांप उठती है। ये वही मेजर शैतान सिंह हैं, जिन्होंने 1962 की जंग में मात्र 120 सैनिकों के साथ मिलकर चीन की महासेना को धूल चटा दी थी।

हालांकि इस महायुद्ध की कीमत देश को मेजर शैतान सिंह और उनके 114 साथियों के बलिदान से चुकानी पड़ी। जिंदा बचे 6 जवानों को चीन की सेना ने कैद कर लिया था, लेकिन रहस्यमयी तरीके से सभी सैनिक चीन की कैद से भाग निकले थे। मौजूदा वक्त में इस युद्ध के केवल 6 में से 4 सिपाही ही जीवित हैं। दरअसल, साल 1962 को भारतीय सेना के लिटमस टेस्ट के तौर पर याद किया जाता था। भारत और चीन की सेनाएं आपस में भिड़ पड़ी थीं। भारतीय सेना न्यूनतम संसाधनों के बावजूद चीन की सेना से लड़ती रही। इस क्रम में भारत ने अपने कई जाबांज सैनिक और अफसर भी खोए। मेजर शैतान 1962 में महज 37 वर्ष के थे। उनकी कुर्बानी को आज भी देश याद करता है। भारत–चीन जंग में अपने उल्लेखनीय नेतृत्व की वजह से मेजर शैतान सिंह को मरणोपरांत परम वीर चक्र से नवाजा गया।

चलिए आपको बताते हैं इस जंग की पूरी कहानी। 1962 की जंग में 13वीं कुमाऊं बटालियन की ब कंपनी ने रेजांग ला दर्रे में चीनी सैनिकों का सामना किया, जिसकी अगुआई शैतान सिंह कर रहे थे। पहली खेप में 350 चीनी सैनिकों ने और दूसरी बार 400 सैनिकों ने हमला बोला लेकिन मेजर शैतान सिंह की अगुआई में भारतीय सेना ने उन्हें मुंहतोड़ जवाब दिया। वे गोलियों से घायल हो गए थे। इसके बावजूद वे एक पोस्ट से दूसरी पोस्ट पर जाकर सैनिकों का हौसला बढ़ाते रहे थे। मेजर शैतान सिंह की सामरिक सूझबूझ और साहसिक नेतृत्व की वजह से इस मोर्चे पर भारतीय सेना ने 1000 से अधिक चीनी सैनिकों को मार गिराया। इस जंग में 123 में से 109 भारतीय सैनिक मारे गए. जो 14 जीवित रहे उनमें 9 गंभीर रूप से जख्मी थे।

कांप उठी थी चीनी सेना

वर्ष, 1962 में रेजांगला पोस्ट पर हुए इस युद्ध में तत्कालीन 13 कुमाऊं बटालियन के 124 जवानों में से 114 जवान कुर्बान हो गए थे। इन जवानों ने 1300 चीनी सैनिकों को मार गिराया था। विपरीत भौगोलिक परिस्थितियों और बर्फीले मौसम के बावजूद वीर सैनिकों ने चीन की सेना का डटकर मुकाबला करते हुए उन्हें पराजित कर दिया था। मैदानी क्षेत्रों से गए हमारे सैनिकों के लिए हालत अनुकूल नहीं थे। हथियारों में भी हम उन्नीस थे। वीरों के सामने परीक्षा की घड़ी 17 नवंबर की रात तब आई थी, जब तूफान के कारण रेजांगला की बर्फीली चोटी पर मोर्चा संभाल रहे इन जवानों का संपर्क बटालियन मुख्यालय से टूट गया। विषम परिस्थितियों के बीच ही 18 नवंबर को तड़के चार बजे युद्ध शुरू हो गया, लेकिन किसी को रेजांगला पोस्ट पर चल रहे ऐतिहासिक युद्ध की जानकारी नहीं मिल पाई। 18 हजार फुट ऊंची पोस्ट पर हुए युद्ध में वीरता के सामने चीनी सेना कांप उठी।

रेजांगला पोस्ट पर दिखाई वीरता का सम्मान करते हुए ही भारत सरकार ने कंपनी कमांडर मेजर शैतान सिंह को जहां मरणोपरांत देश के सर्वोच्च वीरता पुरस्कार पदक परमवीर चक्र से जहां अलंकृत किया था, वहीं इसी बटालियन के आठ अन्य जवानों को वीर चक्र, चार को सेना मेडल व एक को मैंशन इन डिस्पेच का सम्मान प्रदान किया गया था। इसके अलावा 13 कुमायूं के कमांडिंग अफसर (सीओ) को एवीएसएम से अलंकृत किया था।

पति के पराक्रम के तेज ने नहीं छलकने दिए आंसू

नई दिल्ली। अशोक चक्र से सम्मानित शहीद लांस नायक नजीर अहमद वानी की पत्नी मेहजबीन ने कहा कि उनके पति के पराक्रम का ओज ऐसा था जिसने उनकी शहादत की खबर सुनकर भी आंखों से आंसू नहीं बहने दिए। मेहजबीन ने कहा, ''उनके शहीद हो जाने की खबर जानने के बाद मैं रोई नहीं। एक अंदरूनी संकल्प था जिसने मुझे रोने नहीं दिया।'' पेशे से शिक्षक एवं दो बच्चों की मां मेहजबीन ने कहा कि नाजिर का प्यार एवं निडर व्यक्तित्व, युवाओं को अच्छा नागरिक बनने की दिशा में प्रोत्साहित करने का प्रेरणास्रोत है। दक्षिण कश्मीर के एक स्कूल में 15 साल पहले हुई मुलाकात में दोनों के बीच पहली नजर का प्यार हो गया था। हालांकि इस बारे में उन्होंने और जानकारी देने से इनकार कर दिया। जम्मू–कश्मीर के कुलगाम में चेकी अश्मुजी के रहने वाले वानी आतंकवाद का रास्ता छोड़कर 2004 में भारतीय सेना की 162 इंफेंट्री बटालियन (प्रादेशिक सेना) से जुड़े थे।

मेहजबीन ने कहा, 'वह मुझसे बेहद प्यार करते थे। वह मेरे मार्गदर्शक थे। वह हम सभी को हमेशा अपने आस–पास के लोगों को खुश रखने, लोगों की समस्याओं का समाधान करने के लिए प्रोत्साहित करते थे। मेहजबीन ने कहा, ''एक शिक्षक के तौर पर मैं अपने राज्य के लोगों को अच्छा नागरिक बनाने के लिये खुद को समर्पित करती हूं। मैंने युवाओं को सही राह पर लाने का संकल्प लिया है और इसके लिये मुझे अपने पति–दुनिया के सबसे अच्छे पति से प्रेरणा मिल रही है। 25 नवंबर की उस घटना को याद करते हुए मेहजबीन ने कहा कि वह अपने मायके में थीं जब उन्हें यह स्तब्ध करने वाली खबर मिली। मेहजबीन ने साक्षात्कार में कहा, '' उन्होंने बीती शाम ही मुझे फोन कर हाल–चाल पूछा था। मैंने उनसे खुद का ध्यान रखने के लिये कहा।

ये 4 देश भी मनाते हैं आजादी का जश्न

नई दिल्ली। देश को आजादी मिले 74 साल पूरे हो चुके हैं. भारत अंग्रेजों की करीब 200 साल की गुलामी से आजाद हुआ था. लेकिन क्या आप जानते हैं भारत के अलावा 4 दिन ऐसे देश हैं जो इसी दिन अपनी आजादी का जश्न मनाते हैं. इन देशों को भी 15 अगस्त के दिन हीं आजादी मिली थी. आइए जानते हैं उन देशों के बारे में।

भारत के अलावा दक्षिण कोरिया, बहरीन और कांगो का नाम शामिल है. जो आजादी का जश्न मनाते हैं. दक्षिण कोरिया ने जापान से 15 अगस्त, 1945 को, बहरीन ने ब्रिटेन से 15 अगस्त, 1971 को और कांगो ने फ्रांस से 15 अगस्त 1960, लिकटेंस्टीन ने 15 अगस्त 1866 को जर्मनी से आजादी हासिल की थी. इन देशों में भी हर साल 15 अगस्त को जश्न मनाया जाता है। बताया जाता है ब्रिटेन भारत को 1947 में नहीं बल्कि साल 1948 में आजाद करना चाहता था, लेकिन महात्मा गांधी के 'भारत छोड़ो आंदोलन' से परेशान होकर अंग्रजों ने भारत को 1 साल पहले ही यानी 15 अगस्त 1947 को ही आजाद करने के विचार पर फैसला ले लिया।

बबली गोस्वामी
मोहित गोस्वामी
SHUBHKAMNA PUBLICATION
9818389932
9310129703
शुभकामना पब्लिकेशन
समाचार पत्र, मैगज़ीन, पोस्टर, कैटलॉग
पम्पलेट, बिल बुक, स्टीकर, विजिटिंग कार्ड, स्टैण्डी
कलर व ब्लैक एण्ड व्हाइट छपवाने के लिए सम्पर्क करें।

वतन पर मरने वालों का बाकी यही निशां होगा?

वतन पर हम हजार बार मर मिटेंगे, कोई अफसोस न होगा, लेकिन क्या वतन वाले हमें एक बार भी याद नहीं करेंगे? देश पर शहीद होने वाले जवानों की रूह जन्नत से शायद यही सवाल करती होगी। शहादत के बाद नेता और अधिकारी शहीदों के परिजनों से थोक में वायदे करते हैं, लेकिन पूरा एक भी नहीं होता। प्रखर राष्ट्रवाद के इस दौर में क्या हाल है शहीदों के परिजनों का, इनके बारे में कुछ जानिए।

मजबूरी में एक कमरे में रहते हैं 10 लोग

जम्मू–कश्मीर में घुसपैठियों से लड़ते हुए 20 सितंबर 2017 को रामप्रवेश यादव शहीद हो गए थे। बागी बलिया के इस लाल का पार्थिव शरीर पहुंचा तो जनप्रतिनिधियों, अफसरों के साथ जनता की भारी भीड़ उमड़ी। जब तक सूरज–चांद रहेगा रामप्रवेश तुम्हारा नाम रहेगा सहित देशभक्ति के नारों से बेल्थरारोड इलाके का टंगुनिया गांव का चप्पा–चप्पा गूंज रहा था। सरकार ने तमाम आश्वासन दिए थे। लेकिन आठ माह बाद सरहद की हिफाजत के लिए कुर्बानी देने वाले शहीद रामप्रवेश के बीबी–बच्चे किस हाल में हैं? उनसे हुए वादों का क्या हुआ? इन सवालों के जवाब जानकर किसी का भी दिल दुख सकता है। रामप्रवेश की शहादत के बाद उनके गांव पहुंचे प्रदेश सरकार में राज्यमंत्री उपेंद्र तिवारी ने 5 लाख का चेक शहीद के पिता और 20 लाख का चेक शहीद की पत्नी को दिया। अंतिम यात्रा में शामिल प्रदेश के राज्यमंत्री उपेंद्र तिवारी, सलेमपुर सांसद रवींद्र कुशवाहा, बेल्थरा रोड विधायक धनंजय कनौजिया और सिकंदरपुर विधायक संजय यादव ने बड़े–बड़े वादे किए थे। शहीद की पत्नी चिंता देवी का कहना है कि वादे केवल जुबानी थे, धरातल पर एक भी काम नहीं हुआ है।

वादे अधूरे, घोषणाएं अधर में

प्रदेश के राज्यमंत्री उपेंद्र तिवारी ने घोषणा की थी कि शहीद के नाम पर स्मारक बनेगा जो आज तक अधूरा है। गांव के प्राथमिक विद्यालय का नाम बदलकर शहीद रामप्रवेश यादव के नाम पर रखने का आश्वासन मिला था, जो अभी तक नहीं हुआ है। गांव तक पहुंचने वाली सड़क बनवाने की बात की गई थी, लेकिन अभी भी कार्य अधूरा है। परिवार को घर देने की जो घोषणा की गई थी, वह भी पूरी नहीं हुई। स्मृति द्वार तो आधा–अधूरा बना है, लेकिन शहीद की मूर्ति आज भी नहीं लगी है। शहीद की मूर्ति के लिए जो जमीन मिली थी, उस पर आज भी दबंगों का कब्जा है। विधवा को पेंशन नहीं, बच्चों की पढ़ाई मुश्किलसबसे बड़ी बात यह है कि आज तक शहीद की विधवा की पेंशन नहीं चालू हुई और न ही कहीं नौकरी मिली। आंसू पोछते हुए कहती हैं, 'घर सरकार से मिले कुछ पैसों में से ही चल रहा है। खेती न होने के कारण गुजर–बसर करना मुश्किल हो गया है। एक कमरे में ही किसी तरह 10 लोगों का गुजर–बसर होता है, घर में कमाने वाले वह इकलौते व्यक्ति थे।

परिवार पर टूटा दुखों का पहाड़

'पिछले साल 2017 14 सितंबर की बात है। वह जम्मू–कश्मीर में तैनात थे। वहीं से फोन किया। एक–दूसरे की आवाज सुन ही पाए थे कि नेटवर्क प्रॉब्लम से आवाज कटने लगी। बोले फायरिंग हो रही हैं, बाद में फोन करेंगे। रातभर सो नहीं पाई। भगवान से प्रार्थना करती रही। अगले दिन मनहूस खबर मिली कि वह शहीद हो गए। इसके बाद जो पूरे परिवार पर दुखों का पहाड़ टूटा वह कम होने का नाम नहीं ले रहा है।' यह दर्द है पाक गोलीबारी में शहीद हुए बिजेंद्र बहादुर सिंह की विधवा सुष्मिता सिंह का। बलिया जिले के बांसडीह इलाके के नारायणपुर गांव के बिजेंद्र के शहीद होने की खबर मिलने के बाद घर पर उस समय शोक–संवेदना के लिए स्थानीय ग्रामीणों के साथ अफसर और नेताओं की भीड़ लग गई थी। इस जवान की अंतिम यात्रा में प्रदेश के ऊर्जा मंत्री श्रीकांत शर्मा शामिल होने पहुंचे थे। शहीद की पत्नी को 20 लाख रुपये और पिता को 5 लाख रुपये का चेक देने के साथ तमाम घोषणाएं हुई थीं। ऊर्जा मंत्री ने प्रदेश सरकार की तरफ से घोषणा की थी कि गांव में शहीद के नाम पर स्मारक, स्टेडियम, शहीद द्वार बनाए जाएंगे और पत्नी को नौकरी दी जाएगी। इन घोषणाओं का क्या हुआ? इस सवाल पर शहीद की पत्नी सुष्मिता का कहना है कि कि इनमें से एक भी काम पूरा नहीं हुआ। सुष्मिता कहती हैं, 'यहां तक कि हमारी पेंशन भी शुरू नहीं हुई। जो पैसा तब मिला था, उसी में जिंदगी की गाड़ी किसी तरह चल रही है। घर के इकलौते बेटे होने के कारण उनकी कमाई पर ही सब कुछ निर्भर था। अचानक परिवार को वह अकेला छोड़कर चले गए। उसके बाद तो जिंदगी ही सूनी हो गई। सरकार की तरफ से घोषणाओं का ढेर लग गया, लेकिन कुछ हुआ नहीं अभी तक। मेरी सरकार से गुजारिश है कि शहादत की बरसी तक कम से कम उनकी मूर्ति तो गांव में स्थापित कर दें। इससे हम लोगों को सुकून मिलेगा। यह आग्रह हम प्रशासनिक अफसरों से भी कर चुके हैं, लेकिन जिले के अधिकारी हाथ खड़े कर रहे हैं। दो बच्चे हैं। बड़ा लड़का तो समझ गया है कि मेरा पिता अब इस दुनिया में नहीं है, लेकिन छोटा लड़का संतराज कहता है कि मैं बड़ा होकर वर्दी पहनकर देश की सेवा करूंगा। पापा जम्मू–कश्मीर में हैं, वहीं मेरी भी वर्दी रखी हुई है। मैं बड़ा होकर उस वर्दी को पापा के साथ पहनकर देश की रक्षा करूंगा।

आश्वासन बहुत मिले, पूरा एक भी नहीं हुआ

मंगल पांडेय की धरती बागी बलिया के थे राजेश यादव। सरहद पर जान न्योछावर करने वाले जवानों की सूची में दुबहर थानाक्षेत्र के डेरा के रहने वाले इस वीर का नाम भी है। जम्मू–कश्मीर के उड़ी सेक्टर में आतंकी हमले में 18 सितंबर 2016 को वह शहीद हो गए थे। इस शहादत के साथ वे सपने भी टूट गए जो उनके घर–परिवार और गांव वालों ने देखे थे। राजेश की शहादत की खबर मिलते ही गांव में अंतिम विदाई देने के लिए जहां हजारों का हुजूम उमड़ा, वहीं अंतिम यात्रा में प्रदेश की पिछली सरकार में कैबिनेट मंत्री रामगोविंद चौधरी भी पहुंचे थे। उन्होंने सरकार की ओर से मिलने वाली सहायता की राशि के रूप में 20 लाख रुपये का चेक शहीद की पत्नी पार्वती को देने के साथ घोषणाओं की झड़ी लगा दी थी। शहीद की पत्नी को सरकारी नौकरी के साथ पेट्रोल पंप या गैस एजेंसी देने और गांव में शहीद के नाम पर द्वार व शहीद की मूर्ति स्थापित करने का ऐलान भी किया गया था। लगभग दो साल होने को है, लेकिन इनमें से एक भी घोषणा पूरी नहीं हुई। यहां तक कि उस दिन के बाद से कोई जनप्रतिनिधि या अधिकारी उस परिवार का हाल–चाल लेने भी नहीं आया।

बेटियों को पढ़ा रही सेना में भेजने के लिए

शहीद राजेश यादव की विधवा पार्वती कहती हैं, 'हमारी तीन बेटियां हैं। इन बेटियों को हमारे पति ने बेटों की तरह पढ़ा–लिखाकर सेना में भेजने का सपना देखा था। पति का सपना पूरा करने के लिए मैं तीनों लड़कियों को पढ़ा रही हूं ताकि वे सेना में नौकरी कर सकें। उनको तिरंगे से बहुत लगाव था इसलिए हमने अपने घर को भी तिरंगे के रंग से रंगवाया है। शहादत के बाद घर पर नेताओं की भीड़ उमड़ी थी। वे दिलासा देकर चले गए। फिर कभी कोई यह जानने भी नहीं आया कि किया हुआ वादा पूरा हुआ कि नहीं। कम से कम शहीद के सपनों को पूरा करने में सरकार मदद करती तो शहीद की विधवाओं की जिंदगी इतनी खराब नहीं होती।'

भुला दी गई बंशीधर की शहादत

बेशक देश के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने वाले शहीदों की आत्माएं हुक्मरानों का रवैया देख शायद यही कह रही होंगी कि 'हम भी बच सकते थे अपने घरों में रहकर। हमको भी मां–बाप ने पाला था दुख सहकर। शहीदों के घर शहादत के दिन से तेरहवीं तक दिलासा देने आने वाले नेताओं, मंत्रियों और अधिकारियों का रेला लगा रहता है। मगर तेरहवीं के बाद कोई झांकने तक नहीं आता। सरकार द्वारा की गई घोषणाएं भी हवा–हवाई साबित होती हैं। शहीदों के परिजनों को इस बात का मलाल तो रहता है, लेकिन अपना दर्द वह कहे तो किससे। कुछ ऐसा ही हुआ है दंतेवाड़ा में 13 अप्रैल 2015 को शहीद हुए बंशीधर नायक के परिजनों के साथ। उनकी शहादत के तीन वर्ष बाद भी न तो सरकारी स्तर पर की गई घोषणाएं ही पूरी हुई और न ही शहीद के घर जाने की किसी जिम्मेदार अधिकारी या मंत्री ने जहमत ही उठाई। देवरिया जिला मुख्यालय से लगभग 20 किलोमीटर दूर तिवई गांव में मजदूर के घर जन्में थे बंशीधर। उनके जन्म के कुछ सालों बाद ही उनके पिताजी का बीमारी के चलते निधन हो गया था। चार बहनों और दो भाइयों में सबसे बड़े बंशीधर घर की माली हालत सुधारने और देश के लिए कुछ कर गुजरने का जज्बा लेकर इंटर पास करने बाद छत्तीसगढ़ आर्म्स फोर्स की 17वीं बटालियन में सिपाही के पद पर भर्ती हो गए। इनकी पहली पोस्टिंग नक्सल प्रभावित दंतेवाड़ा जिला में हुई। नायक के यूनिट की ड्यूटी जगदलपुर तहसील के किरन्दुल इलाके की पेट्रोलिंग में लगी थी। 13 अप्रैल 2015 को इनकी यूनिट सुबह इलाके में गश्त के लिए निकली। पेट्रोलिंग से कैंप लौटते समय रास्ते में नक्सलियों द्वारा बिछाई गई बारूदी सुरंग फटने से ट्रक के चिथड़े उड़ गए। इस हमले में नायक के साथ 5 और जवान शहीद हुए थे। बंशीधर की शहादत पर ढाढस बंधाने जिले के अधिकारी और नेता सभी पहुंचे थे। इस दौरान कई घोषणाएं भी हुई थी। तेरहवीं तक इनके दरवाजे पर अधिकारियों और नेताओं का तांता लगा रहा। लेकिन उसके बाद से अब तक इस शहीद के परिवार का कोई हाल जानने वाला नहीं है। परिजनों को सरकार से 20 लाख रुपये का चेक और बंशीधर के छोटे भाई मुरलीधर को छत्तीसगढ़ पुलिस में नौकरी तो मिल गई, लेकिन बाकी घोषणाएं अभी तक अधूरी हैं।

मिनी लॉकडाउन के दौरान कैसे मनाए जश्न-ए-आजादी

सतर्क रहें, घर से बाहर न निकले

क्राइम वीक ब्यूरो

नोएडा। कोरोना वायरस संक्रमण के बढ़ते मामलों के बीच शुक्रवार रात 10 बजे से नोएडा–ग्रेटर नोएडा में मिनी लॉकडाउन लागू हैं और यह सोमवार सुबह 5 बजे तक लागू रहेगा। वहीं, आजादी का जश्न फीका न पड़े इसके लिए एट–होम कार्यक्रम की इजाजत है। जिला प्रशासन भी आजादी का जश्न खुले मैदान में मनाने के बजाय जनपदवासियों से घर पर ही तिरंगा फहराने और जय हिंद का नारा लगाने की अपील कर रहा है। खासतौर पर बिसरख, दादरी, दनकौर व जेवर क्षेत्र में ज्यादा सतर्क रहने की जरूरत है, जरा सी लापरवाही परिवार की जान खतरे में डाल सकती है। कोरोना संक्रमण के व्यापक प्रकोप के चलते इस बार राज्य सरकार ने स्वतंत्रता दिवस मनाने को लेकर कई बड़े बदलाव किए हैं। डीएम सुहास एलवाइ ने समस्त आरडब्ल्यूए को सोसायटी व सेक्टरों में झंडारोहण की अनुमति दी है, लेकिन पांच से ज्यादा लोग एकत्रित नहीं होंगे। झंडारोहण में सिर्फ आरडब्ल्यूए पदाधिकारी ही शामिल हो सकते हैं, अन्य सभी निवासी घर पर ही एट–होम कार्यक्रम के तहत छतों व बालकनी पर तिरंगा फहराए और जय हिंद कहे। इन्हीं का पालन करते हुए सरकारी संस्थानों में नियमों के अनुसार झंडारोहण किया जाएगा। गैर–सरकारी संस्थाएं ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित कर आजादी का जश्न मना सकती है।

डीएम ने कहा कि कोरोना वायरस व्यक्ति से व्यक्ति और समूह से समूह में फैलता है। ऐसे में स्वतंत्रता दिवस पर एकत्र होकर कार्यक्रम का आयोजन करना सेहत पर भारी पड़ सकता है। इसके लिए उन्होंने आमजन से घर पर रहकर ही आजादी का जश्न मनाने की अपील की। कहा कि स्वास्थ्य विभाग व जिला प्रशासन को पांच महीनों की अथक मेहनत के बाद वायरस पर काबू पाने में सफलता मिली है। अभी हालात सुधरने नहीं है। जरा सी लापरवाही हालात बिगाड़ सकती है।

कोरोना योद्धा व विजेता होंगे सम्मनित

स्वतंत्रता दिवस के अफसर पर जिला प्रशासन कोरोना योद्धाओं और विजेताओं को भी सम्मनित करने की तैयारी कर रहा है। डीएम सुहास एलवाइ ने बताया कि ज्यादा लोग एकत्रित न हो ऐसे में हर विभाग के मुख्या और कोरोना को मात दे चुके सबसे ज्यादा उम्र के मरीज को सम्मनित किया जाएगा। इसकी सूची तैयार की जा रही है। उत्तर प्रदेश सरकार के निर्देश पर कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए हर सप्ताहांत में 55 घंटों के लिए लॉकडाउन लागू किया जा रहा है।

इन पर रहेगा प्रतिबंध

- जिले में धारा 144 लागू है, इसलिए 5 से ज्यादा लोगों के इकट्ठा होने पर प्रतिबंध है।
- वैसे तो सार्वजनिक अवकाश रहेगा, बावजूद इसके सिर्फ ई–पास धारकों को ही आवाजाही की अनुमति होगी।
- बिना कारण घर से नहीं निकलें।
- मास्क लगाना अनिवार्य होगा।
- धार्मिक स्थल खुलेंगे, लेकिन यहां पर जाने के दौरान मास्क लगाना होगा और शारीरिक दूरी के नियमों का पालन करना होगा।

प्रिय पाठकों

अब से आप क्राइम वीक की ताजा न्यूज देख सकते हैं

youtub-crimeweek.com
crimeweek8282@gmail.com
7210008282

पर आपके आसपास की अपडेट जानकारी देखें व हमसे जुड़ें

धन्यवाद।

क्राइम वीक

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक व मुद्रक परमजीत सिंह द्वारा वत्स ऑफसेट,, मैन दादरी रोड, बरौला, सेक्टर-49 नोएडा से छपवाकर जी-42 ए, गामा-2, ग्रेटर नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित किया है।

संपादक
बबली गोस्वामी

आर.एन.आई. नं.
UPHIN/2012/57116
मो. नं. 9818389932

सूचना : किसी भी समाचार प्रकाशन के लिए सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। ये लेखकों/पत्रकारों के अपने विचार व समाचार है। समाचार पत्र से संबंधित सभी विवादों का निस्तारण नोएडा से संबंधित कोर्ट में होगा।

ग्रेटर नोएडा में 1480 फ्लैटों की स्कीम लॉच

ग्रेटर नोएडा। अगर आप दिल्ली से सटे गौतमुद्धनगर जिले के ग्रेटर नोएडा में अपना आशियाना बनाने की चाहत रखते हैं तो यह खबर आपके लिए बेहद काम की है। ग्रेटर नोएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण ने शहर के विभिन्न सेक्टरों में स्वतंत्रता दिवस पर 1480 फ्लैट की स्कीम लॉन्च की है। इस स्कीम के तहत 29.76 वर्गमीटर से 132.95 वर्गमीटर तक के भवन भी शामिल हैं। स्कीम के तहत ओमीक्रॉन–1ए में बहुमंजिला टॉवर में पहले आओ और पहले पाओ के आधार पर फ्लैटों आवंटन किया जाएगा। वहीं, ग्रेटर नोएडा शहर के म्यू–2, ज्यू–3, ईटा–2, ओमीक्रॉन–2 और सेक्टर–12 में 29.76 वर्गमीटर से 132.95 वर्गमीटर तक के भवन भी योजना में हैं। स्कीम में भाग्यशाली आवंटियों को फ्लैटों पर कब्जा आवंटन से एक वर्ष के भीतर मिल जाएगा।

992 फ्लैट में आजमा सकते हैं अपनी किस्मत

ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण द्वारा स्वंतत्रता दिवस पर 992 फ्लैटों की स्कीम भी लॉन्च की गई है। दरअसल, प्राधिकरण ने सेक्टर ओमीक्रॉन–1ए में आवासीय भवनों की स्कीम शुरू की है। इसमें बहुमंजिले 992 फ्लैट हैं। इसमें 2 बीएचके और 2 बीएचके डीलक्स के 992 फ्लैट हैं। प्राधिकरण के मुताबिक, 15 से 20 मंजिला टॉवर के फ्लैट 58.18 और 83.38 वर्गमीटर के हैं। इनकी कीमत 34.72 लाख से 52.29 लाख रुपये के बीच है। इस स्कीम में आवंटन पहले आओ और पहले पाओ के आधार पर किया जाएगा।

प्राधिकरण के मुताबिक, 488 भवन विभिन्न आवासीय सेक्टर मसलन म्यू–2, ज्यू–3, ईटा–2, ओमीक्रॉन–1, सेक्टर–12 में हैं। इस योजना में भवन के कुल मूल्य की 30 फीसद रकम का भुगतान कर भवन लिया जा सकता है। वहीं, इस योजना में यदि आवेदक एक मुश्त भुगतान करना चाहता है तो उसे 5 फीसद की छूट भी मिलेगी। प्राधिकरण नेस्कीम के तलत 2 वर्षी व 4 वर्षी की भुगतान योजना भी उपलब्ध करवाई है।

भीम आर्मी प्रमुख चंद्रशेखर को सुदीक्षा के घर जाने से रोका

ग्रेटर नोएडा। भीम आर्मी प्रमुख चंद्रशेखर आजाद शाम सुदीक्षा के गांव डेरी स्कनर पहुंचे, लेकिन पुलिस ने उन्हें कोरोना संक्रमण और सुदीक्षा का घर कंटेंटमेंट जोन में होने का हवाला देकर रोक लिया। पुलिस ने सपा के प्रतिनिधिमंडल को भी उनके घर जाने से रोका। पुलिस ने सामाजिक दूरी के उल्लंघन से संक्रमण फैलने की आशंका जताई। लगभग एक घंटे बाद चंद्रशेखर काफिले के साथ पुलिस आयुक्त से मिलने की बात कहकर चले गए।

पुलिस के अनुसार, चंद्रशेखर करीब छह बजे सुदीक्षा के गांव पहुंचे। सूचना मिलते ही पुलिस अलर्ट हो गई। पुलिस ने चंद्रशेखर और उनके काफिले को गांव से कुछ दूर रोक लिया। चंद्रशेखर ने कहा कि वह परिजनों से मिलेंगे। उन्हें जाने दिया जाए या फिर परिवार को उनसे मिलने के लिए बुलाया जाए। कुछ देर बाद चंद्रशेखर व सपाइयों के प्रतिनिधिमंडल को सुदीक्षा के घर से कुछ दूर एक स्थान पर बैठा दिया गया, लेकिन जिलाधिकारी के लिखित आदेश दिखाकर उन्हें सुदीक्षा के परिजनों से मिलने से रोक दिया गया। इस संबंध में सपा के जिला प्रवक्ता श्याम सिंह भाटी ने बताया कि प्रतिनिधिमंडल सुदीक्षा के नाम से प्रेरणा स्थल बनाने के लिए ग्रामीणों व परिजन से जगह आदि को लेकर चर्चा करने गया था। पुलिस–प्रशासन संक्रमण का हवाला देकर राजनीतिक दलों को सुदीक्षा के परिवार से मिलने से रोक रहे हैं, लेकिन वह सुदीक्षा और उसके परिवार को न्याय दिलाएंगे। इसके लिए पार्टी को आंदोलन ही क्यों न करना पड़े।

पीलिया के मरीज को अस्पतालों ने नहीं किया भर्ती

नोएडा। जिले में कई अस्पतालों के चक्कर काटने के बाद भी पीलिया के एक मरीज को भर्ती नहीं किया गया। इसकी वजह से उसकी हालत बिगड़ गई और शरीर के कई अंगों ने काम करना बंद कर दिया। अब मरीज का इलाज दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में चल रहा है। दुजाना गांव में रहने वाले शोभित ने बताया कि उसके 28 वर्षीय भाई मोहित की तबियत पिछले 15 दिनों से खराब थी। परिजनों ने उसे बादलपुर के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में दिखाया था। डॉक्टरों ने मोहित को पीलिया बताते हुए बड़े अस्पताल ले जाने की बात कही। शोभित के अनुसार दो दिन पहले परिजन उसे लेकर एलएनजेपी अस्पताल लेकर पहुंचे। आधार कार्ड नहीं होने की वजह से मोहित को वहां भर्ती नहीं किया गया। इसके बाद परिजन उसे लेकर पंत अस्पताल पहुंचे, यहां भी बिस्तर खाली नहीं होने की बात कहकर लौटा दिया गया। जीटीबी अस्पताल ने भी मोहित को भर्ती नहीं किया। हताश होकर परिजन मोहित को घर ले गए। हालत बिगड़ने पर शुक्रवार सुबह परिजन मरीज को लेकर जिला अस्पताल पहुंचे। यहां पर डॉक्टरों ने उसे भर्ती कर लिया, लेकिन हालत गंभीर होने की वजह से रेफर कर दिया। अभी मरीज वेंटिलेटर पर है।

जिला न्यायालय में बार ने फहराया झंडा

नोएडा। आज सुबह 8: 10 बजे सुबह जनपद दीवानी एवं फौजदारी बार एसोसियेशन गौतम बुद्ध नगर द्वारा प्रत्येक वर्ष की भांति स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण न्यायालय परिसर में संपन्न कराया गया जिसमें मनोज भाटी(बोडाकी) अध्यक्ष ,नीरज चौहान सचिव ,पूर्व अध्यक्ष श्री योगेंद्र भाटी जी, प्रमोद वर्मा, संजय सिंह भाटी ,कालू राम चौधरी, राजीव तोंगड ,पूर्व सचिव सूर्य प्रताप सिंह, राव सुनील भाटी, प्रमोद सुंनपूरा , डॉ० देव भाटी, देवेन्दर राहुलचौधरी ,ललित शर्मा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष मुकेश सेन, सह सचिव प्रेम त्यागी, सांस्कृतिक सचिव कविता चौहान, वरिष्ठ अधिवक्ता मुकेश कर्दम, ओमप्रकाश मधुर चेयरमैन , पूर्व अध्यक्ष बलवीर सुमन ,ड़ीडी वशिष्ठ , सुरेंद्र शर्मा , अवधेश शर्मा, भूप सिंह सतपाल मुकेश सिसोदिया, महेश गुप्ता ,पवन तालान, अजय तालान , प्रवेश नागर ,अनिल हरित, नेक चंद नरेंद्र चौहान ,पवन खेड़ी ,ओमकार नागर, शीशपाल सुभाष खैरपुर धर्मेंद्र जयंत, बिर्जेश नागर, आस मोहम्मद, सुभाष कनरसा ,जय कुमार ,हरी भूषण गिरी, राजन शर्मा नरेंद्र चौहान, श्याम सिंह चौधरी, देवेंद्र लोहिया, करविंदर ,कविन्दर लोहिया, रामकुमार चौधरी, सुनील इमलियाँ ,बलराज लढपुरा ,सुनील डाढ़ा ,अमित खारी अमित भाटी, ठाकुर सुनील, सुनील दुजाना, सुशील मावी, प्रवीण बैंसला, विजय बंसल, अजय रावल, गजेंद्र ,कुलदीप त्यागी, दीपक त्यागी, संदीप त्यागी, रमेश उपाध्याय, अवधेश चौंधरी ,हरिन्दर तोंगड ,सनोज भाटी ,दिनेश राणा, प्रवेश पाली, हरकेश नागर ,जितेंद्र नागर ,राकेश कर्दम, विपिन सिसोदिया देवेश दादरी कपिल मकोड़ा डीपी सिंह जी व अन्य अधिवक्ता मौजूद रहे। इस अवसर पर शहीदों के बलिदान को भी याद किया गया।

उधर दूसरी तरफ मिहिर भोज औद्योगिक शिक्षण संस्था के कॉलेज के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री कुलदीप भाटी ने ध्वजारोहण किया इस अवसर पर सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए कॉलेज की प्रबंध समिति के सभी पदाधिकारी संजय भाटी आर पी सिंह कॉलेज के प्रधानाचार्य एवं समस्त स्टाफ उपस्थित रहा तथा देश के अमर शहीदों को नमन किया। इस मौके पर श्री जयकरण भाटी खेडी एवं श्री बलराज नागर जी भी उपस्थित रहे।

समस्त क्षेत्रवासियों को
स्वतंत्रता दिवस की 74वीं
वर्षगाठ पर
हार्दिक शुभकामनाएं

कोविड-19 के इस कठिन अवसर पर हम नगर पंचायत क्षेत्र के निवासियों से निम्न सहयोग की अपेक्षा करते हैं-

1- इस कोविड-19 के संक्रमण को रोकने हेतु जब जरूरी हो तभी घर से बाहर निकलें।
2- बाजार जाते समय हमेशा मास्क का प्रयोग करें।
3- कोविड-19 संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए हाथों को हर एक घंटे बाद साबुन से धोएं।
4- सार्वजनिक स्थलों पर भीड़ न लगाएं सोशल डिस्टेसिंग का पालन करें।
5- नगर के सभी व्यापारी बिना मास्क लगाए आने वाले ग्राहकों को दुकान से दूर रखें तथा मास्क लगाने के लिए प्रेरित करें इसमें प्रशासन का सहयोग करें।
6- कार्यालय के सभी बकाया करों का भुगतान समय से करें। जिससे नगर की समस्त व्यवस्थाएं सुचारु रूप से चल सकें।
7- अपने पशुओं को सड़क पर न बांधें एवं न ही खुला छोड़ें इससे गंदगी फैलती है।

ओमप्रकाश गुप्ता
अधिशाषी अधिकारी/उपजिलाधिकारी
नगर पंचायत सिंगाही भेड़ौरा-खीरी

उत्तम कुमार मिश्र
अध्यक्ष
नगर पंचायत सिंगाही भेड़ौरा-खीरी

कार्यालय नगर पंचायत सिंगाही भेड़ौरा लखीमपुर-खीरी